eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

कामायनी के स्त्री पात्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. आशुतोष कुमार राय[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, राजकीय महिला महाविद्यालय सिरसागंज, फिरोजाबाद उ0प्र0

Received: 20 Nov 2020, Accepted: 30 Nov 2020, Published with Peer Review on line: 31 Jan 2021

Abstract

जयशंकर प्रसाद ने अपने साहित्य का मूल आधार भारतीय सांस्कृतिक पुनर्निर्माण को बनाया है। सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के दौरान वे एक महत्वपूर्ण स्थापना से बार–बार टकराते हैं, और वह है स्त्री–पुरुष का आपसी संबंध। प्रसाद के साहित्य में स्त्रियाँ केवल श्रद्धा मात्र नहीं हैं, बल्कि वे संघर्ष, औदात्य, गरिमा और दुर्बलता का भी प्रतीक बनकर आती हैं। कामायनी में तो प्रसाद जी ने श्रद्धा और इड़ा को जितने द्वंद्वात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा है उतना ही एक दूसरे के पूरक के रूप में भी। संघर्ष और समाहार दोनों स्तर एक दूसरे में बुने हुए हैं। जयशंकर प्रसाद ने अपने साहित्य में स्त्री को केवल प्रेम और सौंदर्य की प्रतीक नहीं बनाया, बल्कि उसे आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन और संघर्षशीलता का संवाहक भी प्रस्तुत किया। उनकी कविताओं में नारी के रूप, स्वभाव और उसकी भूमिका का एक ऐसा सजीव चित्रण मिलता है, जो मानवता के विकास में उसकी अद्वितीय भूमिका को रेखांकित करता है। प्रस्तुत लेख में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि कामायनी में श्रद्धा और इड़ा अपने स्त्री रूप में किस तरह मानवता के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास यात्रा में सहायक सिद्ध होती है और साथ ही यह भी कि दोनों स्त्री पात्रों को नायिका – खलनायिका के कोष्ठक मे विभाजित करके देखना कितना औचित्यपूर्ण है।

बीज शब्द– सांस्कृतिक पुनर्निर्माण, शैवागम, मार्क्सवाद, जड़ तत्व, विज्ञानवाद, आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन

Introduction

प्रसाद केवल छायावाद के ही नहीं, बल्कि संपूर्ण हिंदी साहित्य की एक अद्वितीय रत्न हैं। हिंदी काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध तथा गद्य–काव्य आदि विधाओं में उनका योगदान अद्वितीय है। जयशंकर प्रसाद ने अपने साहित्य का मूल आधार भारतीय सांस्कृतिक पुनर्निर्माण को बनाया है। इस सांस्कृतिक पुनर्निर्माण में उन्होंने प्राचीन भारतीय मूल्यों और आधुनिक भारतीय मूल्यों के टकराव को गहराई से समझा और समाज तथा मानवता के उत्थान के लिए जो मूल्य प्रासंगिक हो सकते हैं, उन्हें रचनात्मक तरीके से हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

ऐसे सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के दौरान वे एक महत्वपूर्ण स्थापना से बार–बार टकराते हैं, और वह है स्त्री–पुरुष का आपसी संबंध। आज, जब हम एक भौतिकतावादी दौर में जी रहे हैं, वहाँ पुरुष द्वारा स्त्रियों को पददलित करने की घटनाएँ दिखाई देती हैं। इसके विपरीत, स्त्री का स्वाभिमानी विद्रोही रूप भी स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है। प्रसाद ने अपनी काव्य रचनाओं में इस विषय पर गहन मंथन किया है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

आमतौर पर प्रसाद को समझने के लिए हम उनकी कविताओं की कुछ प्रसिद्ध पंक्तियों का उदाहरण देते हैं। उदाहरणस्वरूप, कामायनी के श्रद्धा सर्ग की ये पंक्तियाँ –

नारी, तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत–सी बहा करो,
जीवन के समतल प्रांगण में।[1]

ऐसी पंक्तियों के आधार पर यह धारणा बनाई जाती है कि प्रसाद स्त्री को एक ऐसी वस्तु के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं, जो केवल श्रद्धा की पात्र हो और सभी मानवीय लक्षणों से मुक्त हो। लेकिन इस स्थापना के आधार पर हम केवल उनके एकांगी विवेचन पर केंद्रित हो जाते हैं, और यह प्रसाद के व्यापक दृष्टिकोण के साथ अन्याय करता है।

प्रसाद के साहित्य में स्त्रियाँ केवल श्रद्धा मात्र नहीं हैं, बल्कि वे संघर्ष, औदात्य, गरिमा और दुर्बलता का भी प्रतीक बनकर आती हैं। कामायनी में कामायनी को 'जगत की मंगल कामना अकेली' कहा गया है। साथ ही श्रद्धा स्वयं को मनु को समर्पित करती हुई कहती है कि –

दया, माया ममता लो आज , मधुरिमा लो , अगाध विश्वास
हमारा हृदय–रत्न– निधि स्वच्छ तुम्हारे लिए खुला है पास।[2]

अर्थात श्रद्धा के रूप में स्त्री सभी सद्‌गुणों को साक्षात विग्रह है।

वहीं दूसरी तराफ इडा, अपने बुद्धिवादी स्वरूप में मनु को समर्पित करती है। उसका चित्रण करते हुए प्रसाद जी ने नारी के दूसरे रूप और गुणों का वर्णन किया है–

बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल –
बक्षस्थल पर एकत्र धरे संसृति के सब विज्ञान ज्ञान
था एक हाथ में कर्म–कलश वसुधा–जीवन–रस–सार लिये
दूसरा विचारों के नभ को या मधुर अभय अवलंब दिये
त्रिवली थी त्रिगुण–तरंगमयी, आलोक–वसन लिपटा अराल
चरणों में थी गति भरी ताल[3]

इन सभी प्रश्नों के माध्यम से वे यह सिद्ध करते हैं कि स्त्री अपने आप में, और मूलतः, सबसे पहले मानवीय है। और मानवीय होने के तर्क से उसमें मानव–सुलभ गुण और अवगुण दोनों हो सकते हैं। लेकिन इनसे ऊपर उठकर अपने मूल मानवीय स्वभाव को पहचानकर ही स्त्री श्रद्धा और देवी तक बन सकती है।जयशंकर प्रसाद ने अपने साहित्य में स्त्री को केवल प्रेम और सौंदर्य की प्रतीक नहीं बनाया, बल्कि उसे आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन और संघर्षशीलता का संवाहक भी प्रस्तुत किया। उनकी कविताओं में नारी के रूप, स्वभाव और उसकी भूमिका का एक ऐसा सजीव चित्रण मिलता है, जो मानवता के विकास में उसकी अद्वितीय भूमिका को रेखांकित करता है ।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

श्रद्धा मनुष्य की रागात्मिका वृत्ति का प्रतीक है। श्रद्धा के सहारे प्रसाद जी यह बताना चाहते है कि नारी अपने आंतरिक गुणों के सहारे बर्बर मनुष्य को अच्छा बना सकती है। इसके लिए स्त्री को अपने दुख, करुणा तथा संघर्ष को स्वयं में ही रखना होगा–

आँसू से भींगे अंचल पर मन का सब कुछ रखना होगा
तुमको अपनी स्मित रेखा से यह संधिपत्र लिखना होगा।[4]

वहीं दूसरी तरफ है इड़ा, जो विज्ञान, शासन, नियमन आदि की सहायता से मनु के भौतिक उन्नयन में सहयोग करती है। पर जब मनु अपनी सीमा का उल्लंघन करते हुए आततायी बनने को उद्यत हो जाता है , तब वही जन विद्रोह की निमित्त बनती है। मनु के यौन उत्पीड़न का सक्रिय विरोध करती हुयी वह नारी मुक्ति की प्रतीक बन जाती है, किन्तु जब युद्ध में भीषण नरसंहार होता है तो उसे आत्मग्लानि होती है। श्रद्धा से संवाद करते हुये उसका अपराध बोध बहुत जाग्रत हो जाता है। इड़ा के इस पात्रत्व को लेकर कई समीक्षक असंतुष्ट हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के अनुसार–"श्रद्धा जब कुमार को लेकर प्रजाविद्रोह के उपरांत सारस्वत नगर में पहुंचती है तब इड़ा से कहती है कि शसिर चढ़ी रही पाया न हृदयश। क्या श्रद्धा के संबंध में नहीं कहा जा सकता था कि 'रस पगी रही पाई न बुद्धिश। जब दोनों अलग अलग सत्ताएँ करके रखी गई हैं तब एक को दूसरी से शून्य कहना, और दूसरी को पहली से शून्य न कहना, गड़बड़ में डालता है। पर श्रद्धा में किसी प्रकार की कमी की भावना कवि की एकांतिक मधुर भावना के अनुकूल न थी।"[5] विद्वानों की मुख्य आपत्ति यह रही है कि इसको कठपुतली बना दिया गया है। मुक्तिबोध इड़ा के दृढ़ और उज्ज्वल चरित्र के बारे में लिखते है– "इड़ा के पास न केवल बुद्धिवाद अर्थात् विज्ञानवाद है, वरन् कर्म–संगठन की क्षमता भी है। नियमन और अनुशासन के बिना कर्म–संगठन नहीं हो सकता, क्योंकि प्राकृतिक साधनों तथा वैज्ञानिक साधनों के समुचित विकास का कार्य सामूहिक ही होता है, जिसके लिए नियम–विधान आवश्यक है।

इड़ा की बुद्धि वायवीय, अंतर्मुख, कुहरिल मार्गों पर नहीं चलतीय वह मूर्त, बाह्य, स्पष्ट मार्गों पर चलनेवाली विधायक शक्ति है। इड़ा का व्यक्तित्व–चरित्र बहिर्मुख, सकर्मक, विज्ञानवादी तथा वैयक्तिक स्वार्थ से नितांत रहित है।"[6] मुक्तिबोध कि इस समीक्षा के बारे में डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी ने लिखा है– "मुक्तिबोध की यह समीक्षा निश्चय हो विचारोत्तेजक है तथा और भी अधिक सार्थक हो पाती, यदि वे अपने मार्क्सवादी चिंतन को यहाँ अस्थान पर स्थापित करने का आग्रह न करते। यह वैसा ही है, जैसा कि श्कामायनीश को शैवागम के माध्यम से समझना। फिर मार्क्सवाद को लाना एक गलती को ठीक करने के लिए दूसरी और बड़ी गलती करना है।" [7] इन सबका समाहार करते हुए प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित जी ने लिखा है– "वस्तुतः ये शंकाएँ इसलिए उत्पन्न होती हैं कि हम इड़ा को मनोवृत्ति न मानकर मुख्यतः पात्र मान लेते हैं। कामायनीकार ने उसके बहाने भौतिकबुद्धि का भरसक मानवीकरण किया है। फिर भी कुछ अंतराल रह ही गये हैं, किन्तु वे महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। कवि की मूल मान्यता यह है कि श्रद्धा सरीखी नारी ही आज के विपथित, भोगवादी, अहंकारी, स्वेच्छाचारी मानव को सही दिशा–दृष्टि दे सकती है।" [8]

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

कामायनी को रूपक काव्य के तौर पर देखने पर इड़ा और श्रद्धा भले ही दो अलग–अलग मनोवृतियों का प्रतिनिधित्व करें पर अपने–अपने ढंग से यह दोनों पत्र जीवन प्रियता को ही अभिव्यक्त करती हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण है इड़ा और श्रद्धा का आपसी सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध। इड़ा को तो श्रद्धा दर्शन सर्ग में श्जीवन की अंधानुरक्तिश कहती है, और इसी का नियमन करने के लिए वह कुमार को इड़ा के साथ छोड़ देती है–

हे सौम्य ! इड़ा का शुचि दुलार,
हर लेगा तेरा व्यथा–भार,
यह तर्कमयी तू श्रद्धामय,
तू मननशील कर कर्म अभय,
इसका तू सब संताप निचय,
हर ले, हो मानव भाग्य उदय,
सब की समरसता कर प्रचार,
मेरे सुत ! सुन माँ की पुकार ।[9]

कामायनी में श्रद्धा और इड़ा दोनों का उद्देश्य एक ही है और वह है जड़ तत्व को चेतन करना। इसीलिए मनु के प्रति दोनों का उद्‌बोधन लगभग एक जैसे ही भाषा में है । श्रद्धा कहती है दृ

कर्म का भोग, भोग का कर्म
यही जड़ का चेतन आनंद

और दूसरे तरफ इड़ा भी यही बात अलग ढंग से कहती है –

तुम जड़ता को चौतन्य करो विज्ञान सहज साधन उपाय।

श्रद्धा और इड़ा की यह समानांतर गति आगे भी दिखाई देती है। दोनों ही मनु की आदिम अहंवादी प्रवृत्ति को शांत और अनुशासित करना चाहती हैं और अंतत दोनों ही मनु को रुष्ट कर देती हैं । श्रद्धा और इड़ा दोनों मनु की रचनात्मक क्षमता को अपने–अपने ढंग से जागृत और सक्रिय करना चाहती हैं और दोनों ही इसके लिए प्रकृति के समायोजन पर बल देती हैं। लेकिन दोनों का तरीका अलग अलग है । इस बात को डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी जी इस तरह कहते हैं दृ"श्रद्धा की रचना या सर्जन में जीव सृष्टि के धरातल से लेकर मानसिक सर्जन तक सम्मिलित है, इड़ा के सृजन में विज्ञान की प्रमुखता है।"[10] श्रद्धा और इड़ा के इस मौलिक अंतर को देखकर के तमाम विद्वान दोनों को नायिका – खलनायिका के कोष्टक में विभाजित करके देखते हैं । इसके लिए रामस्वरूप चतुर्वेदी जी कहते हैं कि 'श्रद्धा को नायिका और इड़ा को खलनायिका मान कर चलने की जो प्रवृत्ति कभी–कभी समीक्षकों में दिखाई देती है वह सर्वथा भ्रांत और सरल वर्गीकरण की भावना से प्रेरित है। श्रद्धा और इड़ा दोनों के व्यक्तित्व – और वे वर्णनात्मक महाकाव्य के वास्तविक चरित्र ना होकर सूक्ष्म सांकेतिक व्यक्तित्व जैसे हैं –बहुत दूर तक एक दूसरे के समानांतर चलते हैं।"[11] कुल मिलाकर देखा जाए तो

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

प्रसाद जी ने श्रद्धा और इड़ा को जितने द्वंद्वात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा है उतना ही एक दूसरे के पूरक के रूप में भी । संघर्ष और समाहार दोनों स्तर एक दूसरे में बुने हुए हैं।

इस तरह देखा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी में में नारी केवल पारंपरिक भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज, संस्कृति और दार्शनिक चेतना की प्रेरणा है। कामायनी में नारी का व्यक्तित्व बहुआयामी हैरू वह प्रेमिका, माँ, सहचरी, संघर्षशील नारी और आध्यात्मिक शक्ति है।कामायनी नारी के सौंदर्य, संघर्ष, स्वतंत्रता और सामाजिक भूमिका को न केवल महिमामंडित करती हैं, बल्कि उसे समाज और आध्यात्म की आधारशिला के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1– प्रसाद जयशंकर , कामायनी, प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी, 1985, पृ.– 45
2– वही, पृ.– 25
3– वही, पृ.– 72
4– वही, पृ.– 45
5– शुक्ल रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2057 वि. , पृ.– 374
6– मुक्तिबोध गजानन माधव, प्रसाद की इड़ा, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और प्रसाद, (सं– शंभुनाथ), भारतीय साहित्य संस्थान, कलकत्ता, 1989, पृ.– 76
7– कामायनी का पुनर्मूल्यांकन , लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2003, पृ.–16
8– प्रसाद समग्र, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 2006, पृ.–36
9– प्रसाद जयशंकर , कामायनी, प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी, 1985, पृ.– 114
10– कामायनी का पुनर्मूल्यांकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2003, पृ.–28
11– वही, पृ.– 28